ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* August- 2020
Innovation The Research Concept

टोंक के मुस्लिम सद्भावना स्थल

Tonk's Muslim Goodwill Site

Paper Submission: 15/08/2020, Date of Acceptance: 26/08/2020, Date of Publication: 27/08/2020

राशिद मियॉ
सहायक आचार्य,
उर्दू विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, टोंक,
राजस्थान, भारत

सारांश

नवाबों की नगरी के नाम से विख्यात पूर्व पठानी रियासत टोंक न केवल एक ऐतिहासिक शहर है अपितु यहां बहुमूल्य सांस्कृतिक धरोहरें भी मौजूद हैं। यहां के किले, फसीलें, गढियें, खण्डहर, दर्शनीय हवेलियां कोठियां, व महल यहां के ऐतिहासिक मन्दिर, मस्जिद, कुए, बावड़ियां व तालाबों के साथ यहां सद्भावना दर्शाते गंगा जमुनी संस्कृति की निशानदेही करने वाले विभिन्न आस्था केन्द्रों में सूफी संतों की दरगाहें, रजिया का महल, छतरी व मजार आदि का सामाजिक सौहार्द्र एवं सद्भावना स्थापित करने में विशेष महत्व है।

टोंक में कई सूफी संतों की दरगाहें पुराने समय से ही यहां मौजूद हैं। इन मशहूर हस्तियों की मजार, दरगाह, महल, व छतरी का विवरण निम्नानुसार हैः–

(1) दरियाशाह बाबा की दरगाह (2) चौबुर्जे वाले बाबा की दरगाह (3) रंजके वाले बाबा की दरगाह (4) नौगाजी बाबा की दरगाह (5) गुलाब शाह बाबा की दरगाह (6) मंसूर व मोहना की दरगाह (7) मामू भांजे की दरगाह (8) रजिया का महल, छतरी व मजार (9) बड़ा तकिया (10) मौलवी इरफान साहब की दरगाह (11) ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती का चिल्ला (टोडारायसिंह) आदि

Tonk, a former Pathani princely state known as the city of Nawabs, is not only a historic city but also has valuable cultural heritage. The forts, fences, fortresses, ruins, picturesque havelis, and palaces here, along with its historical temples, mosques, wells, fountains and ponds, have dargahs of Sufi saints in various faith centers, showing the harmony of Ganga-Jamuni culture here, Rajiya The palace, chhatri and tomb etc. have special importance in establishing social harmony and goodwill.

The dargahs of many Sufi saints in Tonk have been present here since old times. The details of the tomb, dargah, palace, and umbrella of these celebrities are as follows: -

(1) Dariyazha Baba's Dargah (2) Chauburje Baba Dargah (3) Ranjake Wale Baba Dargah (4) Naugaji Baba Dargah (5) Gulab Shah Baba Dargah (6) Mansur and Mohana's Dargah (7) Mamu Nephew's Dargah (8) Razia's Palace, Chhatri and Mazar (9) Bara Pillow (10) Maulvi Irfan Saheb's Dargah (11) Khwaja Moinuddin Chishti's Chilla (Todara Singh) etc.

मुख्य शब्द : सांस्कृतिक धरोहर, सद्भावना केन्द्र, मजार, महल, छतरी, दरगाहें, तकिये, ऐतिहासिक विरासत, हिन्दू मुस्लिम सोहार्द्र, आमिल इत्यादि।

Cultural Heritage, Sadbhavna Kendra, Mazar, Mahal, Chhatri, Dargahs, Pillows, Historical Heritage, Hindu Muslim Sohardra, Amil etc.

प्रस्तावना

युनेस्कों विशेषज्ञ डा0 ई.आर. एलचिन ने सांस्कृतिक पर्यटन के कुछ पहलुओं का अध्ययन करते हुए 1969 में एक रिर्पोट में बताया था कि ''भारत में आने वाले 54 प्रतिशत पर्यटक यहां आना इसलिए पसन्द करते हैं, क्योंकि यहां मानव निर्मित इमारतें, मन्दिर, मस्जिद तथा चर्च आदि (ऐतिहासिक विरासत) हैं। उन्होनें यह भी बताया था कि धार्मिक विचारो वालें पर्यटकों की स्मारकों में गहरी रूचि होती है। प्राकृतिक विरासत का स्थान उसके बाद में है।''

इन मजारों व दरगाहों की विस्तृत जानकारी इस तरह है :–

दरियाशाह बाबा का मजार

दरियाशाह का सम्बंध अफगानिस्तान के फारयाब इलाके से था। वहां मंगोल हमले के पश्चात् यह टोंक आकर रहने लगे थे। आपका सम्बंध अपने समय के बादशाह इल्तुतमिश से बड़ा गहरा सम्बंध था, वह एक आध्यात्मिक व

यक्ति थे। सुल्तान इल्तुतमिश ने उनकी पानी की आपूर्ति हेतु निकट ही एक बावड़ी का भी निर्माण कराया था, जो दरियाशाह की बावड़ी के नाम से प्रसिद्ध है। इस बावड़ी के पानी से त्वचा सम्बंधी बीमारियां दूर होती हैं, इसीलिये त्वचा सम्बंधी बीमारियों के कई मरीज दूर–दूर से यहां आकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते हैं।

चौबुर्ज वाले बाबा की दरगाह

सल्तनत कालीन इस दरगाह के साहिबे मजार का असली नाम तो पता नहीं चला। मंगोल आक्रमण के समय अफगान इलाके नीमरोज के 'चहारबुर्ज के' नामक स्थान से आपके टोंक आने का पता चलता है। यहीं तालाब पुरानी टोंक अल मशहूर ''चतुर्भुज'' के निकट ही आपने अपनी इबादतगाह कायम की थी। बाबा की दरगाह हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही धर्मावलम्बियों की आस्था और श्रद्धा का केन्द्र है।

रंजके वाले बाबा

यह दरगाह सवाई माधोपुर रोड के निकट टोंक में स्थित है। माली समाज के हिन्दू लोग प्रारम्भ से ही इस मजार की साफ सफाई तथा सेवा आदि करते आ रहे हैं। साहिबे मजार का नाम जलालुद्ददीन शाह बताया जाता है। मशहूर है कि अलाउद्ददीन खिलजी के घोड़ों व ऊँटों के चारे का बंदोबस्त इन ही के जिम्मे था। यही कारण रहा कि आपका नाम ''रंजके वाले बाबा'' मशहूर हो गया।

नौगाजी बाबा की दरगाह

बनास नदी के किनारे पर पुराने पुल के समीप यह दरगाह पुराने समय की है। उक्त मजार के सम्बंध में कई किद्वन्तियां प्रचलित हैं। कोई इनका कद नौ गज का होना बताता है, तो कोई नौ जंगे लड़ा हुआ होना बताता है। दरअसल यहां नौ मजार बने हुए हैं इसी कारण से यह नौगाजी दरगाह कहलाई। यह लोग संभवतया टोंक शहर के प्रवेश द्वार बनास चौकी के निगरानी करने वाले ओहदेदार व इबादत गुजार बन्दे थे। इनमें सबसे बड़े बुजुर्ग का नाम सैयद महमूद शाह था सबसे बड़ा मजार इन ही का है।

गुलाब शाह पीर की दरगाह

टोंक में जयपुर रोड पर एक स्थान गन्जे शहीदां में यह मजार स्थित है, साहिबे मजार के जलाली होने की बड़ी शोहरत है, लौग इनके मजार पर गुलाब के फूल भेंट कर अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं।

मंसूर व मोहना की दरगाह

पुराने टोंक में बमोर गैट के पास ऊंचाई पर स्थित अकबर कालीन यह दरगाह उस जमाने के अकबरी आमिल मन्सूर व उनकी प्रेमिका मोहना के मजारों की है। दरगाह से जुड़ी हुई एक मस्जिद नवाब अमीर खॉ के समय की है। उर्दू के मशहूर ऐतिहासिक नॉविल लेखक अब्दुल हलीम 'शरर' नें अपने नाविल मंसूर व मोहना'' का प्लाट इन ही मजारों से प्रेरित होकर निर्माण किया जाना बताया जाता है।

मामू भांजे की दरगाह

टोंक में सिविल लाईन रोड पर रेड़ीवास तालाब के समीप स्थित यह दरगाह पुराने समय से काफी मशहूर है। दरगाह में जो दो कब्रें हैं वह रिश्ते में मामू ओर भांजे की बताई जाती हैं । मजार पर खुशबूदार फूलों की बेल लगी हुई है।

बड़ा तकिया

छोटे तकिये के पास जीर्ण शीर्ण इमारत में कई मजारात अलाउद्ददीन खिलजी के समय के हैं, यह तकिया भी उन ही के द्वारा बनवाया बताया जाता है जो पुरानी टोंक में निवाई दरवाजे के पास स्थित है।

मौलवी इरफान साहब की दरगाह

बहीर व पुरानी टोंक को जोड़ने वाले रोड पर रामद्वारे के समीप इस दरगाह की देखरेख पीढियों से हिन्दू माली परिवार कर रहा है नवाब सआदत अली खॉ के जमाने में जो महामारी फैली उसे दूर करने में इरफान साहब का बड़ा रोल बताया जाता है। यह दरगाह हिन्दू मुस्लिम सौहार्द्र का अनूठा उदाहरण है।

ख्वाजा साहब का चिल्ला

हजरत ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती रह0 अलैह ने मक्का से अजमेर यात्रा के दौरान टोंक में कई जगह रूकते हुए टोडारायसिंह पहुॅच कर चिल्ला खींचना बताया जाता है। यह स्थान टोडा में आज भी पहाड़ी पर मौजूद है। लोग यहां पहुंच कर विभिन्न मौकों पर अपनी श्रद्धा प्रकट करते हैं।

रजिया का महल, छतरी, तख्त व मजार

छोटा तकिया का दूसरा नाम टोंक में रजिया का महल है। इस इमारत में 6x12 फिट के ढाई इंच मोटे पत्थर का तख्ता बना हुआ है। इसे रजिया का तख्त बताया जाता है। यहीं समीप से पहाड़ी पर जाने का रास्ता सुरंग के रूप में था। पहाड़ी पर ही एक छतरी मौजूद है।

डा0 सैयद सादिक अली ने अपनी पुस्तक ''रजिया सुलतान की शहादत और उसके मजार की हकीकत'' (प्रकाशन 2007) में टोंक के एक प्राचीन मजार को रजिया सुल्तान का मजार होने का दावा किया है। अपने दावे को प्रमाणित करने के लिए उन्होनें निम्नांकित स्त्रोतों का सहारा लिया है:–

1. मजार पर बने विशेष निशान जो सल्तनत कालीन अन्य इमारतों में भी मौजूद है।
2. मजार पर जमें पत्थरों से उभरती हुई तहरीर (लिखावट)
3. इतिहास संबंधित पुस्तकें 4. लोक मान्यता 5. स्वयं की परिकल्पना

डा0 सादिक अली के अनुसार ''परिस्थितियॉ यह इशारा करती हैं कि याकूत को भटिण्डा में मारा नहीं गया, बल्कि किसी गुमनाम जगह (शायद टोंक में) कैद करके रखा गया होगा। कैथल में पराजय के पश्चात् आगे की रणनीति तय करने के लिए जब वह (रजिया) राजपूताना आई तो उसे जासूसों द्वारा याकूत का पता मिला, उसने याकूत को कैद से आजाद कराया होगा। और फिर बाद में बहराम शाह के फौजी दस्ते के घैरे में आकर दोनों वीरता पूर्वक टोंक में शहीद हुए।'' (पृष्ठ संख्या 42)

मजार की स्थिति

पुराने टोंक में स्थित दरिया शाह की बावडी के समीप जमीनी सतह से लगभग 3 मीटर ऊंचे चबूतरे पर 20 X 20 साइज का यह मज़ार है, यह स्थान चारों ओर

पहाडियों से घिरा हुआ राजपुताना की जमना कही जाने वाले बनास नदी के किनारे पर स्थित है, यही रणथम्भोर अभियान (1226 ई0) के समय रज़िया अल्तमश के साथ थी जो अस्वस्थ हो गई थी, तब यहां एक बुजुर्ग की दुआ से वह स्वस्थ हुई। अल्तमश के हुक्म से स्थानिय आमिल (प्रशासक) नें इन बुजुर्ग के लिए पहाडी पर मस्जिद बनवाई थी जो आज भी यहा मौजूद है। रज़िया के मज़ार से जुडा हुआ एक और मज़ार जो लगभग डेढ मीटर ऊंचे चबूतरे पर 15 X 15 का बना हुआ है। डॉ. सादिक अली के मतानुसार यह मज़ार याकूत का है।'' (पृष्ठ संख्या 18)

रजिया सुलतान का वीरता पूर्वक किया गया शासन प्राचीन भारतीय समाज में नारी क्षमता का सबसे सशक्त और अनुठा उदाहरण है क्योंकि यहां उस समय तक सत्ता में केवल पुरूषों का ही एकाधिकार था समाज में पर्दा प्रथा एवं अन्य रूढियॉ चरम पर थीं, रजिया सुलतान के मजार पर देश विदेश से पर्यटक एवं शोधार्थी आते रहते हैं।

अध्ययन का उददेश्य

ऐतिहासिक आस्था स्थलों व केंद्रों की पुरातत्व विभाग द्वारा सार संभाल तथा देखभाल की जाकर इनका विकास किया जावें। जिससे सर्व समाज में शांति सद्भावना एवं भाई चारे को बढ़ावा मिल सके।

निष्कर्ष

उपर्युक्त सूफी सन्तों, व रजिया सुलतान आदि के मजार, दरगाहें न केवल सभी सम्प्रदायों की आस्था एवं सद्भावना के केन्द्र हैं अपितु यहां लोग दर्शन के साथ अपनी मुरादें पेश करने और रूहानी सुकून की तलाश में दूर दूर से हर वर्ग के लोग आते हैं। जिससे इनका महत्व सामाजिक सद्भावना स्थलों के रूप में और भी बढ गया है। यहां आने वाले श्रद्धालुओं व पर्यटकों की संख्या में लगातार बढोतरी हुई है।

स्वतत्रंता के पश्चात् से ही टोंक क्षैत्र की पुरातत्व विभाग द्वारा अरूचि, अनदेखी व उपेक्षा के कारण यहां के पर्यटन स्थलों का समुचित विकास नहीं हो पाया है। एक दो दर्शनीय स्थलों के अलावा यहां कई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक व आस्था केन्द्रों का विकास होना भी अति आवश्यक है। ताकि गंगा जमुनी संस्कृति के बहुमूल्य एवं अनूठे उदाहरण शेष रह सकें।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *तारीख रियासत टोंक, लेखक – हनुमान सिंहल*
2. *रजिया सुलतान की शहादत और उसके मजार की हकीकत लेखक – डा0 सैयद सादिक अली (2007)*
3. *टोंक स्मारिका (2012) सम्पादक – डा0 सैयद सादिक अली प्रकाशक–अंजुमन खानदाने अमीरिया टोंक*
4. *तारीखे टोंकः मास्टर एजाज हुसैन*
5. *द क्वीन रजिया सुल्तान डॉ.: रफीक जकरिया*
6. *रजिया सुल्तानः जीवन एवं कार्यः डॉ सैयद सादिक अली 2020 साहित्यगार जयपुर*
7. *तबकाते नासिरीः मिन्हाजुस सिराज (पंजाब यूनिवर्सिटी 1954)*
8. *रेहला (अजाइबुल असफार) इब्नेबतूता*